International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 25-05-2019; Accepted: 28-06-2019
www.hindijournal.com
Volume 5; Issue 4; July 2019; Page No. 88-89

स्वतंत्रा के पूर्व हिन्दी बाल काव्य की धारणा

डॉ० संजय कुमार
हिन्दी विभाग, ति०मा०भा०वि०वि० भागलपुर, भारत।

प्रस्तावना

बीसवी सदी के आरंभ में बाल साहित्य के विकास क्रम पर विचार करते पर जाते है। कि आरंभ में भारीय पंरपरा के अनुरूप बच्चों को ढालने का ही प्रयास हुआ है। क्योंकि उस समय इससे हटना तत्कालीन समाज कभी स्वीकार न करता, किन्तु सन् 1905 में भंग और 1915 में गाँधी जी के भारत आगमन के बाद स्वतंत्रता से आंदोलन ने जो गति पकड़ी उससे न केवल देश की राजनीतिक परिदृष्य में बदलाव आया बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक और राष्ट्रीय मूल्यों ने भी कई प्रश्न उपस्थित किए और उनके प्रति उनलोगों को सावधान और सचेत होना पड़ा, तब यह भी आवश्यक समझा गया कि उन प्रश्नों और चुनौतियों के उत्तर में हमें भावी पीढ़ी को वर्तमान जन आकांक्षा के अनुरूप तैयार करना है। उसकी अधारभूमि निर्मित की जाए और इस कार्य को व्यापक रूप में संपन्न करने का माध्यम थी। बाल–पत्रिकाएँ जिन्हें देश भर में पहुँचाया जा सकता था। सन् 1917 में "बाल सखा" का प्रकाशन पं० महावीर प्रसाद द्विवेदी की प्रेरणा से इंडियन प्रेस शुरू हुआ तो उसके संपादन पं० वदरीनाथ भट्ट के संपादकीय में उस समय के समाज में भावी पीढ़ी के प्रति व्याप्त जन आकांक्षा रेखांकित करके यह स्पष्ट की गई थी उन्नत भाषाओं में बाल–साहित्य को एक विशेष स्थान प्राप्त है। यह अटल नियम है कि बालक–बालिकाओं को प्रारंभ में जैसी शिक्षा दी जाती है, आगे चलकर वैसे ही होते है जो आज किशोर है वही कल प्रौढ़ हो जाएँगें और उनके तन के साथ मन की भली–बुरी भावनाओं की उन्नति या अवनति आवश्यक होगी। आजकल बहुत से नवयुवक यदि अपनी मातृभाषा या अपने धर्म से धृणा करते है, तो यह उन्हीं कुसंस्कारों का परिणाम है। एतैव इस बात का प्रयास करना है, कि कुसंस्कारों की जड़ ही न जमने पाए बड़ा भारी परोपकार है, क्योंकि इसमें जाति या देश का कुछ कल्याण होना निश्चित है। इन्हीं बातों का विचार करके उन्नत जातियों के लोग अपने देश के बच्चों का सुधार करना आवश्यक समझते हैं। उन्में सत्य तेज, ओज स्फृति, उत्साह, जाति प्रेम आत्मगौरव आदि सदभावों को उन्नत करके तथा कुसंस्कारों की जड़ काटकर उनके अच्छे मार्ग पर चलने की सीख देनी चाहिए।

इतने व्यापक फलक को लेकर जब "बालसखा" का प्रकाशन शुरू हुआ तो उसके विविध उद्देश्यों की पूर्ति के लिए अनेक लेखकों और कवि आगे आए। सन् 1917 जनवरी बालसखा में प्रकाशित मैथिलीशरण गुप्त की लंबी कविता 'गोदी भरे लाल' प्रकाशित हुई थी। उसकी कुछ पंक्तियाँ दष्ट्रव्य है :–

"स्वागत सखे, आओ सखे, हम तुम परस्पर बाल है।
निज मातृभूमि स्वदेश के, गोदी भरे हम लाल है।।
भावी सुकवि है, दार्शनिक है और वैज्ञानिक हमी।
शिक्षक चिकित्सक धीरनाविक, वीर वैज्ञानिक हमी।।"[1]

उपर्युक्त पंक्तियों में बालक की अनंत संभावनाओं का उल्लेख किया है। सन् 1920 में असहयोग आंदोलन शुरू हो जाने से देश व्यापी स्वतन्त्रता संग्राम छिड़ गया आ गई। इस परिस्थिति में बच्चों में राष्ट्रीय भावना का संचार करना आवश्यक समझा गया। फिर अंग्रेजी भाषा का बढ़ता प्रभाव अंग्रेजी शिक्षा पद्धिति, ईसाई मिशनरियों द्वारा धर्म परिवर्तन के प्रयासों आदि समस्याएँ भी तत्कालीन समाज की चिंता का विषय बन रही थी। भारतीय समाज इनके विरूद्ध स्वदेशी की भावना जगाना अपने धर्म, राष्ट्र जाति पर गर्व करने पर बल देने में व्यस्त था और भावी पीढ़ी को भी लोग इन प्रभावों से बचाकर रखना चाहते थे और उनकी यही आकांक्षाए थी कि बच्चे बड़े होकर उनके ही अनुरूप बने। इसलिए उस समय के बाल–साहित्य में इन आकांक्षाओं और उनके प्रति प्रेरित करने के प्रयासों को प्रर्याप्त अभिव्यक्ति मिली। मन्नन द्विवेदी गजपूरी ने अपनी "मातृभूमि" कविता के अंत में लिखा है यथा :–

"ऐसी मात्भूमि अपनी है, स्वर्ग लोक से भी प्यारी।
जिसकी रक्षा हित तन–मन–धन मेरा सर्वस्व बलिहारी।।"[2]

सन् 1921 से 1933 तक रामचन्द्र रधुनाथ सर्वटे, राम नरेश त्रिपाठी, डॉ० विद्याभूषण विभु, गिरिजादत्त शुक्ल गिरीश, ठाकुर श्री नाथ सिंह, पंडित सुदर्शनाचार्य, ठाकुर गोपाल शरण सिंह आदि अनेक लेखकों कवियों ने विविध विषयक रचनाएँ लिखी जिनकी मूल स्वर राष्ट्रवादी था साथ ही उनमें बच्चों को प्रेरणा देने और जीवन में कुछ बनने का संदेश भी था। ठाकुर गोपालशरण सिंह ने 'बालसखा' मई 1930 में लिखा था यथा :–

"क्या तुमने कर लिया पूर्ण पंडित होकर के
अगर किया संतोष पेट अपना ही भर के।।"[3]

इस समय तक देश में जो राजनीतिक चेतना आई थी उसके फलस्वरूप शिक्षित और प्रवृद्ध वर्ग के लोग विदेशी शासन से संघर्ष करने के लिए आगे लगे थे। बंगाल में राजाराम मोहन राय, स्वामी विवेकान्द, उत्तर भारत में स्वामी दयानंद सर सैय्यद अहमद दक्षिण में रनाडे, तिलक और गोखले आदि ने नए विचारों के जो बीज बिखेर दिए थे तब लोगों में सामाजिक और धार्मिक जीवन में परिवर्तन आने लगे थे और हिन्दु–मुसलमान सभी अपने धर्मों के प्रति आस्थावान रहते हुए भी देश में सबके हित की बातों को समझने लगे इस दौरान प्रकाशित बाल–साहित्य ने बच्चों में जहाँ राष्ट्रपिता की भावना जगाई वही समयानुकूल नई कल्पना और भविष्य के प्रति नई आशाएँ दी। ठाकुर गोपाल शरण सिंह की यह कविता 'बालसखा' जनवरी 1926 में छपी यथा।

सुदर सजीला चटकीला वायुयान एक,
भैया हरे कागज का आज मैं बनाउँगा।
चढ़ के उसी पे सैर नभ की करूँगा खूब
बादल के साथ–साथ उसको उड़ाउँगा।।[4]

इस प्रकार सन् 1920 के असहयोग और सत्याग्रह आंदोलन के फलस्वरूप आई देश व्यापी राजनीतिक चेतना ने बालसाहित्य को भी पूरी तरह से प्रभावित किया और उस समय के बच्चों में ऐसा बाल साहित्य चेतना का स्त्रोत बना। इस दौरान राष्ट्रीय भावना

से अभिभूत जो पीढ़ी तैयार हुई वही सन् 1942 में युवा शक्ति बनकर प्रकट हुई। जिसकी क्रांति ने भारत में बिट्रिस शासन की जड़े हिला दी। लेकिन राष्ट्रीयता के साथ–साथ बालसाहित्य लेखकों कवि और संपादकों ने बच्चों को बदलते समाजिक परिवेश वैज्ञानिक उन्नति तथा अन्य क्षेत्रों में हो रहे विकास से भी परिचित कराते हुए उन्हें नए भविष्य के प्रति भी तैयार करने की प्रक्रिया जारी रखी थी।

निष्कर्ष

वास्तव में स्वतंन्त्रता पूर्व जो बालसाहित्य लिखा गया था उससे देश के बच्चों में नवजागरण हुआ। बाल साहित्य में यह प्रवृति हिन्दी ही नहीं बंगला, मराठी, गुजराती, मलयालम इत्यादि अन्य भारतीय भाषाओं में भी परिलक्षित हुई है। यह देश व्यापी प्रेरणा उस जन आकांक्षाओं का प्रतीक था जो स्वतंत्र होकर विश्व के अन्य प्रगतिशील और विकासोन्मुख राष्ट्रों के साथ मिलकर चलना चाहती थी और इस हेतु अपनी भावी–पीढ़ी को तैयार कर रही थी। हिन्दी में माखनलाल चतुर्वेदी, सोहनलाल द्विवेदी आदि ने बच्चों को युगानुरूप बनाने तथा ऐसे सामाजिक वातावरण में परिचित कराने के उद्देश्य से अनेक ऐसे बाल–गीत लिखे जिनमें युद्ध के प्रति घृणा थी वही भारतीय राष्ट्रीयता तथा उसकी स्वतंत्रता के लिए मर मिटने की भावना और गाँधी जी की अंहिंसा की लड़ाई को स्वीकार कर स्वदेश के प्रति अपना सब कुछ समर्पित करने का संदेश था।

अतः हिन्दी बालसात्य अत्यधिक महत्वपूर्ण तथ्य है। यदि हम अपने राष्ट्र को संस्कारित करना चाहते है तो हमें आज मेधावी, जिज्ञासू तथा ज्ञान पिपासु का बोध कराना चाहिए ताकि बच्चों को सही दिशा प्रदान की जा सकती है।

संदर्भ सूचि

1. आज कल पत्रिका : नवम्बर 2006 पृ० 33।
2. साहित्य अमृत : अगस्त 2004 पृ० 114।
3. वही।
4. बाल शाखा पृ० 35।